कथा सरिता

सबसे बड़ी कला

एक ब्रह्मचारी था। उसकी उम्र बीस वर्ष की थी। वह चतुर तो था ही, ज्ञानार्जन में भी कुशल और तत्पर था। वह प्रशंसा के लिए अनेक कलाओं का अभ्यास करना चाहता था। इसलिए वह कई देशों में घूमता रहा। एक व्यक्ति को उसने बाण बनाते देखा और उससे बाण बनाने की कला सीख ली। इसी तरह एक दूसरे देश में जाकर उसने जहाज बनाने की कला सीख ली। तीसरे देश में जाकर शिल्प-कला भी सीख ली। इस तरह वह सोलह देशों में गया और वहाँ से अनेक कलाओं का विशारद होकर लौटा। वह ब्रह्मचारी जब अपने देश में पहुँचा तो अहंकारवश लोगों से पूछता-'पृथ्वी पर है मुझ जैसा कोई कलाविद!'

बुद्ध को इस युवा ब्रह्मचारी की दशा पर दया आई। उन्होंने उसे बुलाया और कहा-'मैं तुम्हें एक बहुत बड़ी कला सिखाना चाहता हूँ।' थोड़ी देर बाद वे एक वृद्ध श्रमण का वेश बनाकर हाथ में भिक्षापात्र लिए उसके सामने उपस्थित हुए। ब्रह्मचारी पहचान नहीं पाया। देखकर बोला-'कौन हो तुम?' ब्रह्मचारी ने बड़े अभिमान से पूछा।

'मैं अपने आप को जानने की कला जानता हूँ।' बुद्ध ने कहा। ब्रह्मचारी ने पूछा-'क्या अर्थ है तुम्हारे इस कथन का?'

वे बोले-'जो बाण बना लेता है और बड़े-बड़े जहाजों पर नियंत्रण रख लेता है। सुंदर घर भी बना लेता है। यह तो कलाकार का काम है। पर जो अपने शरीर और मन पर नियंत्रण रखता है वह महान कलाकार है। ऐसा कलाकार अपने जीवन को महान बना सकता है। अब बताओ जहाज बनाना बड़ी बात है या जीवन बनाना।' ब्रह्मचारी अपनी भूल पर पछताया और कभी ज्ञान का अहंकार नहीं करने की कसम खाई।

समर्थ गुरु

समर्थ गुरु स्वामी रामदास के जीवन का यह नियम था कि वे स्नान एवं पूजा से निवृत्त होकर भिक्षा मांगने के लिए महज पाँच घर जाते थे। कुछ न कुछ लेकर ही वहाँ से लौटते थे।

एक बार उन्होंने एक घर के द्वार पर खड़े होकर 'जय-जय रघुवीर समर्थ' का घोष किया। घर की मालकिन गुस्से में थी। वह बाहर आई और चिल्लाकर बोली, 'तुम लोगों को भीख मांगने के अलावा कोई दूसरा धंधा नहीं है। मुफ्त मिल जाता है, अत: चले आते हो। मेरे घर में तुम्हारी दाल नहीं गलेगी, जाओ कोई दूसरे का घर ढूंढ़ो।' समर्थ गुरु हंसकर बोले, 'माताजी! मैं खाली हाथ किसी द्वार से वापस नहीं जाता हूँ। कुछ न कुछ तो लूंगा ही।' वह महिला भोजन के बाद चौका साफ कर रही थी और उसके हाथ में चौका साफ करने का घी-तेल से सना हुआ कपड़ा था। वह उसे संत की झोली में डालते हुए बोली-'लो यह कपड़ा और यहाँ से नौ-दो ग्यारह हो जाओ।'

समर्थ गुरु प्रसन्न होकर वहाँ से निकले और नदी पर पहुँचे। उन्होंने उस कपड़े को धोया और उसकी बत्तियां बनाई। बत्तियां लेकर वे देवालय पहुँचे। गुरु के चले जाने के बाद उस महिला का हृदय भी पसीजा। उसे इतना रंज हुआ कि वह उन्हें खोजने के लिए दौड़ पड़ी। वह उस देवालय में आ पहुँची, जहाँ समर्थ गुरु बैठे थे। वह उनके चरणों में गिर पड़ी और बोली, 'देव! मैंने आप सरीखे संत का निरादर किया है। मुझे क्षमा करें।' उसके नयनों से अश्रुधारा बह निकली। रामदास बोले-'देवी! तुमने उचित भिक्षा दी थी। तुम्हारी भिक्षा का ही प्रताप है कि यह देवालय जगमगा उठा है। शाम की आरती सम्भव हो सकी है। वरना तुम्हारा दिया हुआ भोजन तो अब तक खत्म हो गया होता और मेरे प्रभु बिना प्रसाद के सो जाते।' भावविभोर गुरु ने महिला को धन्यवाद दिया। महिला ने क्षमा मांगते हुए कहा-'गुरुदेव! सचमुच आप समर्थ गुरु हैं।'

हमें मृत्यु का भय नहीं है

हैहय क्षत्रियों के वंश में एक परमपूज्य नामक राजकुमार थे। एक बार वे वन में आखेट के लिए गये। वृक्षों की आड़ से उन्होंने दूर एक मृग का कुछ शरीर देखा और बाण छोड़ दिया। पास जाने पर उन्हें पता चला कि मृग के धोखे में उन्होंने मृग चर्म ओढ़े एक मुनि को मार डाला है। इस ब्रह्महत्या के कारण उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ। दु:खित होकर वे अपने नगर लौट आये और अपने नरेश से सब बातें उन्होंने सच-सच कह दीं। हैहय-नरेश राजकुमार के साथ वन में गये और वहाँ एक युवक मुनि को मरा हुआ देखकर बहुत चिंतित हुए। उन्होंने यह पता लगाने का प्रयत्न किया कि वे मुनि किसके पुत्र व शिष्य हैं। ढूंढ़ते हुए हैहय-नरेश वन में महर्षि अरिष्टनेमा के आश्रम पर पहुँचे। ऋषि को प्रणाम करके वे चुपचाप खड़े हो गये। जब ऋषि उनका सत्कार करने लगे, तब नरेश ने कहा-'हमारे द्वारा ब्रह्महत्या हुई है, अत: हम आपसे सत्कार पाने योग्य नहीं हैं।' ऋषि अरिष्टनेमा ने पूछा-'आप लोगों ने किस प्रकार ब्रह्महत्या की? उस मृत ब्राह्मण का शरीर कहाँ है?' नरेश ने ब्रह्महत्या की घटना सुनायी और मृत ब्राह्मण का शरीर जहाँ छोड़ा था, वहाँ उसे लेने गये, किंतु उन्हें वहाँ शव मिला नहीं। अपनी असावधानी के लिए उन्हें और भी ग्लानि हुई।

उन दोनों को अत्यंत दु:खी एवं लज्जित देखकर ऋषि ने अपने पुत्र को कुटिया से बाहर बुलाया और बोले-'तुमने जिसे मार डाला था, वह यही ब्राह्मण है। यह तपस्वी मेरा ही पुत्र है।' नरेश आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने पूछा-'भगवन्! यह क्या बात है? ये महात्मा फिर कैसे जीवित हो गये? यह आपके तप का प्रभाव है या इनमें ही कोई अद्भुत शक्ति है?'

ऋषि ने बताया-'राजन्! मृत्यु हमारा स्पर्श भी नहीं कर सकती। हम सदा सत्य का पालन करते हैं, मिथ्या की ओर हमारा मन भूलकर भी नहीं जाता। हम सर्वदा अपने धर्म के अनुसार ही आचरण करते हैं, अत: मृत्यु से हमें डर नहीं है। हम भोजन की सामग्री से यथाशक्ति पूरा अतिथि-सत्कार करते हैं और जिनके भरण-पोषण का भार हम पर है, उन्हें तृप्त करके ही हम शान्त, जितेन्द्रिय और क्षमाशील हैं। हम तीर्थ यात्रा और दान करते हैं तथा पवित्र देश में रहते हैं, इसलिए हमें मृत्यु का भय नहीं है। हम सदा तेजस्वी सत्पुरुषों का ही संग करते हैं, इसलिए हमें मृत्यु का खटका नहीं है।' इतना बताकर ऋषि ने नरेश को आश्वासन देकर विदा किया।

प्रसन्नता का समय

एक राजकुमार था। नाम था अमर। खूब ठाठ-बाठ की ज़िंदगी थी। एक बार जब वह लड़ाई में गया तो उसके रसोईघर के सामान को लेकर तीन सौ ऊँट भी उसके साथ गए। दुर्भाग्य से एक दिन वह खलीफा इस्माइल द्वारा बंदी बना लिया गया। पर दुर्भाग्य भूख को तो नहीं टाल सकता। उसने पास खड़े अपने मुख्य रसोईये से, जो एक भला आदमी था, कहा, 'भाई, कुछ खाने को तो तैयार कर दे।'

उस बेचारे के पास केवल एक मांस का टुकड़ा बचा था। उसने वही देगची में उबलने को रख दिया और भोजन को कुछ अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए स्वयं किसी साग-सब्जी की खोज में निकला। इतने में एक कुत्ता वहाँ से गुज़रा। मांस की गंध से आकर्षित हो उसने अपना मुँह देगची में डाल दिया। पर भाप की गर्मी से वह पीछे हटा तो देगची उसके गले में फंस गई। अब तो घबराकर वह देगची के साथ ही वहाँ से भागा।

अमर ने जब यह देखा तो ज़ोर से हंस पड़ा। अमर की चौकसी कर रहे सैनिक ने पूछा, 'इतने दु:ख में भी आपके होठो से हंसी क्यों फूट रही है?' अमर ने तेजी से भागते हुए कुत्ते की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मुझे यह सोचकर हंसी आ रही है कि आज सुबह तक मेरी रसोई का सामान ले जाने के लिए तीन सौ ऊँटों की आवश्यकता पड़ती थी और अब उसके लिए एक कुत्ता ही काफी है।'

समय के फेर को प्रसन्नता के साथ लेने में ही सार है।

दिल्ली-मोहम्मदपुर। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश, ब्र.कु. कंचन, ब्र.कु. शिवानी, फादर जॉर्ज मनिमाला, युवा एवं खेल मंत्रालय के सेक्रेट्री राजीव गुप्ता, मानव संसाधन व महाप्रबंधक (हुडको) पी.एन. सक्सेना।

पानीपत। मीडिया सेमिनार में दीप प्रज्वलित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार मधुकर द्विवेदी, दैनिक जागरण के प्रदेश समाचार संपादक अवधेश बच्चन, के.बी. पंडित, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. सुशान्त, ब्र.कु. भारत भूषण, ब्र.कु. शान्तनु,माउण्ट आबू, ब्र.कु. गिरीश तथा प्रो. कमल दीक्षित,इन्दौर।

ऋषिकेश। 'तनाव मुक्त जीवन' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए अमीरगिरी आश्रम के महन्त स्वामी विनोद गिरी। साथ हैं ब्र.कु.आरती।

टूण्डला। महाशिवरात्रि कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए चेयरमैन रामवती चौधरी, ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. विजया, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. सरिता व अन्य।

मंगलपुर-ओडिशा। महाशिवरात्रि पर आयोजित शोभायात्रा में उपस्थित हैं ब्र.कु. रंजीता तथा अन्य भाई बहनें।

बुटवल-नेपाल। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'होलिस्टिक हेल्थ' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सभाषद एवं पूर्व मंत्री विष्णु पौडेल, डॉ.श्रीमंत साहू, ब्र.कु.कमला, पूर्व विधायक सूर्य प्रधान, उप-महानगरपालिका प्रमुख विष्णु खनाल एवं अन्य।